सप्तपुरी-यात्रा

अयोध्यदि सातों पुरियाँ काशी में वर्त्तमान है, ऐसा पुराणों का वचन है और इसी आधार पर काशी में जिन-जिन स्थानों में उनकी संस्थिति है, वहाँ उनपुरियों की यात्रा होती है। यह यात्रा नित्य करने का विधान है, परन्तु, इस यात्रा की विशेषता यह है कि इसमें किस ऋतु में किस पुरी की यात्रा करना चाहिए, इसका भी निर्देश है। ब्रहम्वैवर्त्तपुराण३० के अनुसार शंखोद्वार (शखूधार) के पास द्वारका है। यहाँ की याक्त्रा वर्षा में, बिन्दुमाधव के पास विष्णुकांची है, वहाँ की यात्रा शरद ऋतु में, सोमेश्वर के वायव्यकोण में रामकुण्ड पर अयोध्या है जहाँ रामेश्वर नाम का शिवलिंग है. वहाँ की यात्रा ग्रीष्म ऋतु में, असीसंगम पर गंगाद्वार, अर्थात हरिद्वार है, जहाँ की यात्रा शिशिर ऋतु में, वृद्धकाल से कृत्तिवासेश्वर तक उज्जयिनी अथवा अवन्तिका है, जहाँ की यात्रा हेमन्त ऋतु में, उत्तरार्क (बकरियाकुण्ड) से उत्तर वरणा नदी तक मथुरा है, जहाँ की यात्रा वसन्तऋतु में होती है। काशी और शिवकांची तो काशी में व्याप्त ही है।३१

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.